नागालैंड की लोक कथाएँ

डॉ. चंद्र शेखर चौबे
संपर्क- 7355620345

(1) हॉर्नबिल के पंख

कई साल पहले सेमा जाति के एक गाँव में दो औरतें रहती थीं। दोनों के एक-एक बच्चे थे। एक की बेटी और दूसरे का बेटा। जब भी ये दोनों औरतें अपने खेतों में काम करने जाती तब वे अपने बच्चों को भी साथ ले जाती। दोनों बच्चे एक साथ खेलते और हमेशा साथ में समय बिताते। जब कभी भी एक बच्चा खेत पर नहीं आता तो दूसरा दिन भर रोता और अपनी माँ को काम करने नहीं देता। बच्चों के इस व्यवहार को देखकर लोग आश्चर्य में थे। जैसे-जैसे दोनों बच्चे बड़े होते गए उनका एक दूसरे से लगाव और बढ़ता गया। बच्चों का इतनी छोटी उम्र में एक दूसरे से इस तरह का प्रेम और लगाव देखकर लोग आपस में यह बात करने लगे कि दोनों बच्चों की हरकतें एकदम अलग हैं और जब ये दोनों बड़े होंगे तब इनका आपस में रिश्ता कैसा होगा ? समय बीतता गया। माँ खेतों में काम करती और बच्चे साथ खेलते। धीरे-धीरे दोनों बच्चे बड़े होते गए और अपने माँ के काम में भी हाथ बटाने लगे। धीरे-धीरे दोनों बचपन से किशोरावस्था में पहुँच गए। दोनों का रिश्ता और प्रगाढ़ होता गया। युवावस्था आते-आते दोनों के बीच प्रेम जागृत हुआ। यद्यपि दोनों एक ही जाति के थे पर दोनों के परिवारों की आर्थिक स्थिति समान नहीं थी। खाउली का परिवार अमीर था और किविगो का परिवार गरीब था। फिर भी दोनों एक दूसरे से अटूट प्रेम करते हुए सुंदर भविष्य के सपने देखने लगे। युवा किविगो हमेशा अपने मन में सोचता था कि वह खाउली के घर जाकर उसके माता-पिता से अपने विवाह के संबंध में बात करेगा लेकिन उसके कदम खाउली के घर की तरफ जाते-जाते ठिठक जाते, वह वापस लौट आता था। खाउली ने किविगो के मन की दुविधा को जान लिया था। उसने किविगो को साहस दिया। अमीरी और गरीबी भाग्य और कर्मों का परिणाम है। इससे हमारा प्रेम निर्बल नहीं हो जाता। खाउली की बातों से किविगो को थोड़ा बल मिला। एक दिन किविगो साहस बटोरकर खाउली के घर की ओर चल दिया। खाउली के घर पहुँचकर सामान्य शिष्टाचार के बाद उसने साहस बटोरकर खाउली के पिता से उसका हाथ माँगा। किविगो को जिसका अंदेशा था वही हुआ। खाउली के माता-पिता ने किविगो का अपमान करते हुए अपनी बेटी को यह कहा कि इस लड़के को कुत्ते की थाली में खाना परोसकर दे और घर से भगा दे। खाउली को अपने माता-पिता

के ऐसे व्यवहार की उम्मीद नहीं थी। खाउली ने उत्तर देते हुए कहा – "मैं भी इंसान हूँ और वह भी इंसान है।" यह कहकर वह रसोई में चली गई। उसने अपनी थाली में खाना परोसकर किविगो को खिलाया।

खाउली के माता-पिता उसके भविष्य को लेकर चिंतित थे और उसका विवाह किसी अच्छे और अमीर घर में करना चाहते थे। तभी एक दिन उनके पास समीप के एक गाँव से खाउली के लिए एक अच्छे घराने का रिश्ता आया। उन्होंने खाउली की इच्छा के विरुद्ध रिश्ता स्वीकार कर लिया और शीघ्र ही खाउली का विवाह कर दिया। खाउली विवाह के बाद अपने पति के घर चली गयी। अब किविगो बहुत दुखी और उदास रहने लगा। किविगो के साथियों को विश्वास नहीं हो रहा था कि किविगो के उदासी का कारण खाउली का उससे हमेशा के लिए दूर चले जाना है। उन्होंने किविगो के सच्चे प्रेम की परीक्षा लेने की योजना बनाई। उन्होंने किविगो के सामने यह शर्त रखी - "अगर तुम खाउली से सच्चा प्रेम करते हो तो अपने हाथों में जलता कोयला लेकर खाउली के ससुराल तक जाओ।" किविगो ने अपने दोस्तों की चुनौती स्वीकार करते हुए वैसा ही किया। किविगो के साथियों को बहुत पछतावा हुआ। वे अब समझ चुके थे कि किविगो खाउली से सच्चा प्रेम करता है। उधर किविगो जब खाउली के ससुराल पहुँचा तब रात हो चुकी थी। वह खाउली के घर के बाहर ही था कि खाउली घर से बाहर निकली। उसने किविगो को देखा और पहचान लिया। उसने किविगो को एक बड़ी सी टोकरी में छुपा दिया। अगले दिन अपने पति को जल्दी से खाना देकर उसे खेत पर भेज दिया। आस-पास के सभी लोगों के काम पर चले जाने के बाद खाउली किविगो से मिली। उसने किविगो के प्रेम का साहस और मन की दशा देखकर यह निश्चय किया कि वह उसके साथ उसके गाँव वापस चली जायेगी। बिना विलम्ब किये दोनों उसी समय अपने गाँव को चल दिए। रास्ते में चलते-चलते खाउली बहुत थक गयी। उसे बहुत तेज भूख और प्यास लगी। पहाड़ी झरने से दोनों ने प्यास बुझाई। खाउली अपनी भूख सहन नहीं कर पा रही थी। कुछ दूर चलने पर उसे एक फलदार वृक्ष दिखाई दिया। खाउली ने पेड़ के फल खाने की इच्छा व्यक्त की। किविगो फल तोड़ने के लिए पेड़ पर चढ़ा। पेड़ पर चढ़कर वह फल तोड़कर नीचे गिराने लगा। खाउली फल खाती जा रही थी,उसकी फल खाने की इच्छा और बढ़ती जा रही थी। उसने किविगो से कहा कि वह उस पेड़ के सारे फल खाने के बाद ही आगे बढ़ेगी। किविगो फल तोड़ते हुए पेड़ पर चढ़ता चला गया पर वह नीचे नहीं उतर पाया क्योंकि कहावत थी कि किसी भी पेड़ के फलों को एक बार में तोड़कर नहीं खाते, पाप लगता है। अब किविगो को यह भान हो गया था कि वह कभी नीचे नहीं उतर पायेगा। उसने खाउली से यह कहते हुए अपने आपको एक हॉर्नबिल में बदल कर उड़ गया कि जब भी लोग किसी विचित्र पक्षी के बारे में बात करें तो समझ लेना कि वह पक्षी किविगो है। खाउली को अपने किये पर बहुत पश्चाताप हुआ। वह हताश और दुखी मन से पुनः अपने ससुराल लौट आई।

कुछ दिनों बाद जब खाउली अपने खेतों में काम कर रही थी तभी उसने लोगों को एक विचित्र पक्षी के बारे में बात करते सुना। वह भागकर उस पक्षी को देखने गयी। तब उस पक्षी का एक पंख खाउली के छाती

पर आ गिरा। खाउली ने उस पंख को संभालकर अपने हृदय से लगा लिया। उस रात किविगो खाउली के सपने में आया। खाउली ने किविगो से पूछा कि वह उस पंख का क्या करे ? तब किविगो ने उससे कहा कि इस पंख को विशेष पर्वों पर लड़के-लड़कियाँ इस्तेमाल करें, अपने सर पर मुकुट में लगायें और आभूषणों में सजाकर पहनें। इस प्रकार तब से हर नागा जाति में पीढ़ियों से विशेष सांस्कृतिक पर्वों में हॉर्नबिल पक्षी के पंख का प्रयोग किया जाता है।

(2)
परिश्रमी किसान पुलिए बाद्जे

प्राचीन काल की बात है। कोहिमा गाँव के दक्षिण दिशा की एक पहाड़ी पर पुलिए नाम का एक व्यक्ति रहता था। वह बचपन से ही बहुत परिश्रमी तथा ईमानदार था। उस पहाड़ी गाँव की आर्थिक स्थिति तब पूरी तरह कृषि पर आधारित थी। गाँव के लोग सामूहिक रूप से एक दूसरे के कृषि कार्यों में सहयोग देते। पुलिए भी पहाड़ी ढलान के एक छोटे से हिस्से में बनाए गए सीढ़ीदार खेत पर अपनी खेती करता था। काफी परिश्रम के बाद पुलिए ने झाड़ियों को काटकर जमीन को सीढ़ीदार बनाकर इस पहाड़ी ढलान के हिस्से को खेती के लायक बनाया था और पहाड़ी झरने से उस खेत की सिंचाई के लिए पानी की व्यवस्था की थी। पुलिए ने पहली बार जब खेती शुरू की थी तब खेत की जुताई अपने हाथों से की तथा उसमें धान के बीज डाला। थोड़े दिनों बाद ही खेत में धान के नन्हे-नन्हे पौधे उग आये। पुलिए उन पौधों को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। कुछ दिनों में धान के पौधे लहलहाने लगे। समय पर वह अपने खेतों की निराई करता जिससे अवांछित पौधे उसके फसलों को क्षति न पहुँचा सकें।

पुलिए का कठिन परिश्रम आखिर रंग लाया। फसल पककर तैयार हो गई। फसल काटने का समय आ गया। पुलिए अपनी उपलब्धि पर प्रसन्न था। वह जब भी अपने खेत के समक्ष होता तो अपनी खेती को देखकर उसे अनेक सुखद स्वप्न दिखाई देते। खेती को वह अपने अधिकार की संपत्ति समझता था। खेत में आते ही वह परिवार और समाज की बातें भूलकर स्वप्न में खो जाता। इस तरह अपने आस-पास की दुनिया को भूलकर अपने खेतों में खोये रहने की उसे आदत पड़ गई। वह अपने दोस्तों से कहता – "यह खेती मेरी है।" किशोर एवं युवावस्था आते-आते पुलिए में खेती के लिए अदम्य आकर्षण हो गया था। इसीलिये दुःख, विषाद एवं किसी भी कारण मन अशांत होने पर वह अपने खेत में जाकर शान्ति पाता।

मानव जीवन में अनेक ऐसी घटनाएँ घटती हैं जिनकी कल्पना भी मनुष्य नहीं कर पाता। ये घटनाएँ कुछ तो प्राकृतिक होती हैं, कुछ मानव निर्मित। पुलिए के जीवन में भी ऐसी ही एक दुर्घटना घटी जिसकी कल्पना उसने नहीं की थी। एक दिन जब वह अपने धान के खेत में गया तो उसने देखा कि किसी जंगली

जीव ने उसके फसलों को बहुत क्षति पहुँचायी है। काफी प्रयत्न करने के बाद यह पता लगाने में वह सफल हो गया कि उसकी फसलों को एक विषधर साँप नुकसान पहुँचा रहा है। यह जानकर वह विषाद से भर गया। दुखी मन लेकर वह गाँव में अपने माता-पिता के पास आया। वह मन-ही-मन फसल को क्षति पहुँचाने वाले साँप के विषय में सोचने लगा कि किस प्रकार उसका अंत हो जिससे उसकी फसल नुकसान न हो। अंततः उसने एक उपाय सोचा और साँप को मारने की योजना बनाई। अगले दिन वह खेत पर गया और योजना के अनुसार खेत के बाहर एक बड़ा सा गड्ढा खोदा। शाम ढलने को आई तब वह अपना दाव तथा भाला लेकर उस गड्ढे में छिपकर बैठ गया तथा साँप के आने की प्रतीक्षा करने लगा। पूर्णिमा की रात थी। चन्द्रमा अपने शीतल प्रकाश से धरती को प्रकाशित कर रहा था। स्वच्छ चाँदनी में सभी पेड़, पौधे और आस-पास के खेतों में खड़ी फसलें साफ दृष्टिगोचर हो रही थीं। आकाश तारों से भरा था। चाँदनी रात में दृश्य बहुत ही सुहावना था। रह-रह कर कभी-कभी पक्षियों तथा अन्य जंतुओं की आवाजें भी सुनाई देती थी। धीरे-धीरे आधी रात बीत गई। पुलिए उस गड्ढे में बैठकर साँप के आने की प्रतीक्षा करता रहा। कुछ देर बाद पुलिए ने अपने खेत में सरसराने की आवाज सुनी। पुलिए धीरे-धीरे दबे पाँव गड्ढे से बाहर आया। उसने देखा कि साँप प्रतिदिन की भाँति उसके खेत में धान खा रहा है। पुलिए इस दृश्य को देखकर क्रोधित हो गया। उसने अपना भाला फेंका और एक ही वार में साँप को मार डाला। तभी पुलिए ने अद्भुत दृश्य देखा। साँप की आत्मा शरीर से अलग हो चुकी थी। पुलिए जब तक कुछ समझ पाता, साँप की आत्मा प्रतिशोध लेने के लिए पुलिए की तरफ बढ़ी और क्षण भर में पुलिए जमीन पर ढेर हो गया। पुलिए का दु:खद अंत हो गया |

उधर गाँव में पुलिए के माता-पिता शाम को पुलिए के नहीं लौटने पर चिंता में पड़ गए। ऐसा कभी नहीं हुआ था कि खेतों में काम करके पुलिए शाम को घर न लौटा हो। पुलिए की मृत्यु के संबंध में गाँव में भी किसी को कोई जानकारी नहीं थी। पुलिए की कोई खबर न पाकर उसके माता-पिता बहुत बेचैन हो उठे। किसी तरह रात बीती। गाँव में तरह-तरह की आशंकाएँ व्यक्त की जाने लगीं। गाँव के लोग पुलिए के घर इकट्ठा होने लगे तथा इस घटना के विषय में विचार-विमर्श करने लगे। काफी विचार-विनिमय के बाद सबने यही सोचा कि शायद पुलिए अपने खेतों की रखवाली करने के लिए ही वहाँ रह गया हो। लेकिन दिन चढ़ने पर भी जब पुलिए घर वापस नहीं आया तो गाँव के लोग उसकी तलाश में पहाड़ के नीचे उसके खेतों की ओर चल पड़े। वहाँ पहुँचाने पर उन्हें एक साँप की लाश मिली लेकिन पुलिए का कोई पता नहीं लग सका। गाँव वाले तथा उसके माता-पिता ने चिल्ला-चिल्ला कर पुलिए को बुलाना शुरू किया। पुलिए को जोर-जोर से पुकारने पर अंततः उन लोगों को पुलिए की आवाज सुनाई दी। गाँव वाले उस दिशा की ओर बढ़े जिस तरफ से पुलिए की आवाज आयी थी। लेकिन सब कुछ व्यर्थ साबित हुआ, पुलिए वहाँ नहीं था। गाँव वाले जैसे-जैसे पुलिए का नाम पुकारते हुए आगे बढ़ते, वैसे-वैसे पुलिए की आवाज और दूरी पर सुनाई देती। इस प्रकार दूर से आती हुई आवाज के साथ पुलिए को खोजते-खोजते वे सभी पहाड़ की चोटी पर पहुँच गए, पर पुलिए वहाँ भी नहीं मिला।

अंत में गाँव वाले और पुलिए के माता-पिता सभी निराश हो गए और पुलिए के मिलने की आशा छोड़ दी। सबने मिलकर इधर-उधर बिखरे पत्थरों को एकत्र कर उसी स्थान पर पुलिए के बैठने के लिए एक चबूतरा बना दिया। उस दिन से आज तक इस पहाड़ को पुलिए बाद्‌जे के नाम से जाना जाता है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि पुलिए के परिश्रमी शरीर के अवशेष उस पहाड़ की मिट्टी में मिल जाने के कारण पुलिए बाद्‌जे की उर्वरा शक्ति बढ़ गयी जिस कारण वहाँ नाना प्रकार के पेड़-पौधे और सुगन्धित फूलों के वृक्ष पाए जाते हैं। ये पुष्प गुच्छों के आकार में होते हैं। इस जगह की सुन्दरता और सुगन्धित वातावरण को देखने के लिए आज भी लोग उस पहाड़ पर जाते हैं और पुलिए को याद करते हैं।

(**परिचय :** लेखक क्षेत्रीय निदेशक के रूप में केंद्रीय हिंदी संस्थान (आगरा), दीमापुर केंद्र में कार्यरत हैं। लेखक के अनुसार- यह लोककथाएँ नागालैंड की हिंदी अध्यापिका तेन्तीमोंगला आयर और ईमसिबेनला आओ के सौजन्य से संकलित की गयी हैं।)